आरती श्री काली देवी जी की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ।।
सुन जगदम्बे न कर विलम्बे, सन्तन के भण्डार भरे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जै काली कल्याण करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।१।।
बुद्धि विधाता तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे ।
जब जब भीर पड़े भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।२।।
गुरु के बार सफल जग मोह्हो, तरुणी रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहा भार्या भोग करे ।
शुक्र सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।३।।
ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये, भेंट देन तन द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे ।
बार शनिश्चर कुंकुम वरणी, जब लुंकड़ पर हुकम करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।४।।
खंग खप्पर त्रिशुल हाथ लिये, रक्त बीज कूं भस्म करे ।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहि में मारे, महिषासुर को पकड़ दले ।
आदित बारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।५।।
कृपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे ।
जब तुम देखो दयारूप हो, पल में संकट दूर टरे ।
सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।६।।
सात बार को महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अट ल भवन में राज्य करे ।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिध साधक तेरी भेंट धरे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।७।।

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान करे ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चंवर कुबेर डुलाय करे ।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज्य करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ।
सन्तन प्रतिपाली ।।८।।

विवरण

जिनकी सेवा से सभी मंगल कार्य सिद्ध होते हैं, ऐसी देवी काली जी के आगे हम हाथ जोड़कर अपनी विनती सुनाने आये हैं । पान, सुपारी ध्वजा तथा नारियल हम आपको भेंट चढ़ाने आए हैं । हे जगदम्बे! अब विलम्ब न करते हुए हम सेवकों के मन में ज्ञान का भण्डार भर दो ।

अपने सेवकों का पालन - पोषण करने वाली तथा सदा प्रसन्नचित्त रहनेवाली काली जी हम सबका भला करें । हे काली जी! आप हमें ज्ञान देनेवाली देवी हो तथा इस जग की माता हो, आप हमारे सभी कार्यों को पूर्ण कीजिए, हम सेवकों के लिए आपका चरण ही हमारा आश्रय है, हम आपकी शरण में आए हैं ।

आपके भक्तों पर जब भी कोई संकट आता है तो आप सहायक बन कर उन
कष्टों का निवारण करती हैं । हे काली माता! गुरु के दिन सारे संसार का सम्मोहन करके तरुणी नारी का रूप धरा, आप हमारा भला कीजिएगा । आप माता हो एवं हम आपके पुत्र और आप अपने पुत्रों को खिलाती हो और कहीं पत्नी बनकर भोग देती हो ।

शुक्रवार को सर्व सुख को देनेवाली तथा सदा सहायक रहने वाली माता की हम भक्त गण खड़े होकर आपकी जय जयकार कर रहे हैं । ब्रह्मा,विष्णु एवं महेश भी हाथों में फल लिए, आपको भेंट चढ़ाने के लिए आपके द्वार पर खड़े हैं और आप सिंहासन पर बैठी हुई हैं तथा आपके सिर पर सोने का छत्र चढ़ा हुआ है ।

शनिवार को रोली के रंग का रूप धारण करने वाली माँ इस दिन अपने लुंकड़ों पर आदेश भेजती हो हाथ में खप्पर एवं त्रिशूल लेकर लाल भस्म रमाकर आपने शुम्भ एवं निशुम्भ नामक राक्षसों का क्षण भर में वध कर डाला तथा फिर महिषासुर को भी पकड़ लिया ।

रविवार को आप आदि भवानी होती हैं । हे माता! आप हमारे संकट को दूर कीजिए । हे माता! आपने गुस्से में आकर ढ़ेर सारे दानवों को मार डाला एवं चण्ड मुण्ड नामक राक्षसों को धुन डाला । जब भी देखो आपके रूप से दया ही उमड़ती रहती है तथा आप सबके संकट को एक पल में दूर करती हो। हे माँ! सोमवार को अपने कोमल स्वभाव से हमारी प्रार्थना को सुन लीजिए ।

हे माता! सप्तवारों की महिमा हमने वर्णन कर दी, आपकी महिमा अनेक है, जिसका वर्णन करने में हम समर्थ नहीं हैं । आप सिंह के पीठ पर चढ़कर सारे संसार में राज्य करती हो, आपके भक्त आपको अनेकों प्रकार के भेंट चढ़ाकर तथा आपके महिमा का गान करके आपके दर्शन को पाना चाहते हैं ।

आपके द्वार पर आकर ब्रह्मा जी वेदों का उच्चारण करते हैं तथा शंकर जी आपका ध्यान करते हैं । इन्द्र एवं कृष्ण आपकी आरती करते हैं तथा स्वयं कुबेर चँवर ढुलाते हैं । हे माता! आप प्रसन्नचित्त होकर सम्पूर्ण संसार में राज्य करती हो तथा अपने भक्तों का पालन पोषण करते हुए उनका कल्याण करती हो ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.